बकरियों के लिए आवास

पशुओं के विकास तथा उनसे अधिकतम उत्पादन के लिए स्वच्छ एवं आरामदेह आवास का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। बकरी घर या बाड़ा का निर्माण शुरू करने के लिए स्थान का चुनाव करते समय सर्वप्रथम निम्न बिदुंओं पर ध्यान दें –

- बकरी घर जल जमाव से दूर, ऊँची जगह पर हो।
- जमीन बलुआही हो, ताकि कीचड़ का डर न हो।
- प्रति बकरी 12 वर्ग फीट स्थान की जरूरत होती है।
- बोका के लिए 7 फीट x 5 फीट तथा गाभिन बकरी के लिए 5 फीट x 5 फीट स्थान जरूरी है।
- 100 बकरियों के लिए 60 फीट x 20 फीट का बाड़ा बनवायें, साथ ही इससे दुगुनी–तिगुनी जगह बकरियों के स्वेच्छानुसार घूम–घूमकर बाहर व भीतर आने–जाने के लिए हो।
- बाड़ा की फर्श, बलुआही मिट्टी की सर्वोत्तम मानी जाती है।
- फूस या एस्बेस्ट्स की चादर की छत झोपड़ीनुमा हो तथा दो फीट बाहर निकली रहे। इससे धूप कम लगती है तथा बरसात में अन्दर पानी की छीटें कम पड़ती हैं।
- बाड़े का लम्बा सिरा *ijc&if'pe* हो तथा इसमें *f[kMfd;k vkeu&lkeu* होनी चाहिए।
- फर्श बाहर के तरफ ढ़ालूनुमा रखें।
- अन्दर की जमीन की सतह बाहर की जमीन से एक फीट ऊँची हो, ताकि बाहर का पानी अन्दर नहीं आ सके।

बाड़ा बन जाने के बाद उसमें बकरियों के खाने का बर्त्तन/फीडर रखें जो टिन का बना होता है। इसमें रखा चारा बर्बाद और गंदा नही होता है। फीडर के नीचे सुराख बना रहता है जिसमें से चारा

गिरता रहता है, जिसे बकरियों को खाने में आसानी होती है। बाड़े के एक ओर साफ पानी पीने की व्यवस्था करें। पानी ड्रिंकर में दें। बकरियों के पीने के लिए 24 घंटे पानी रहना जरूरी है, इससे ये तेजी से बढ़ती हैं। बाड़े के बाहर पानी रखने का एक हौज बना सकते हैं। एक–दो फीडर बकरी घर के बाहर भी रखें। बाड़े के पास छायादार चारा वृक्ष जैसे – नीम, शीशम, पीपल, आम, सूबबूल, करंज आदि पेंड़ लगायें जो गर्मी के दिनों में बाड़े को ठण्डा रखेगा तथा समय–समय पर चारे की अवश्यकता को पूरा करेगा।

सीमेंट के बजाय, बलुआही मिट्टी की बनी बाड़े की फर्श ज्यादा आरामदेह होती है। सीमेंट की फर्श से नवजात मेमनों के खूर कट जाते हैं और बकरी जख्मी होकर लँगड़ी हो सकती है। सीमेंट की फर्श बकरियों के मलमुत्र से काफी गंदा होता रहता है और अच्छी तरह से साफ नहीं रखने पर कॉक्सिडियोसिस जैसी बीमारियाँ फैलने लगती हैं। मिट्टी की फर्श, पेसाब या गंदा पानी को सोख लेती हैं। इस मिट्टी को उत्तम खाद के रूप में उपयोग किया जा सकता है। हर छः माह पर 6 इंच गहराई तक के मिट्टी को निकालकर बदल दें तथा इस मिट्टी को खेत में खाद के रूप में उपयोग कर सकते हैं। बकरियों को ठण्ड से बचाने के लिए जाड़े के मौसम में फर्श पर पुआल बिछाना चाहिए। जहाँ पुआल उपलब्ध नहीं है, वहाँ खरपतवार का उपयोग कर सकते हैं। बाड़े को अवश्यकतानुसार बाँस की फट्ठी द्वारा अलग–अलग कमरों में बांट कर, बकरा, गाभिन बकरी तथा बच्चों को अलग–अलग रखना चाहिए। बाड़े के बाहर कम्पोस्ट खाद का गड्ढ़ा बनायें। बाड़े के सफाई के बाद निकाली गई भेनाड़ी इस गड्ढ़ों में डालते जाऐं। सड़ने के बाद यह अच्छी खाद के रूप में बदल जाती है।

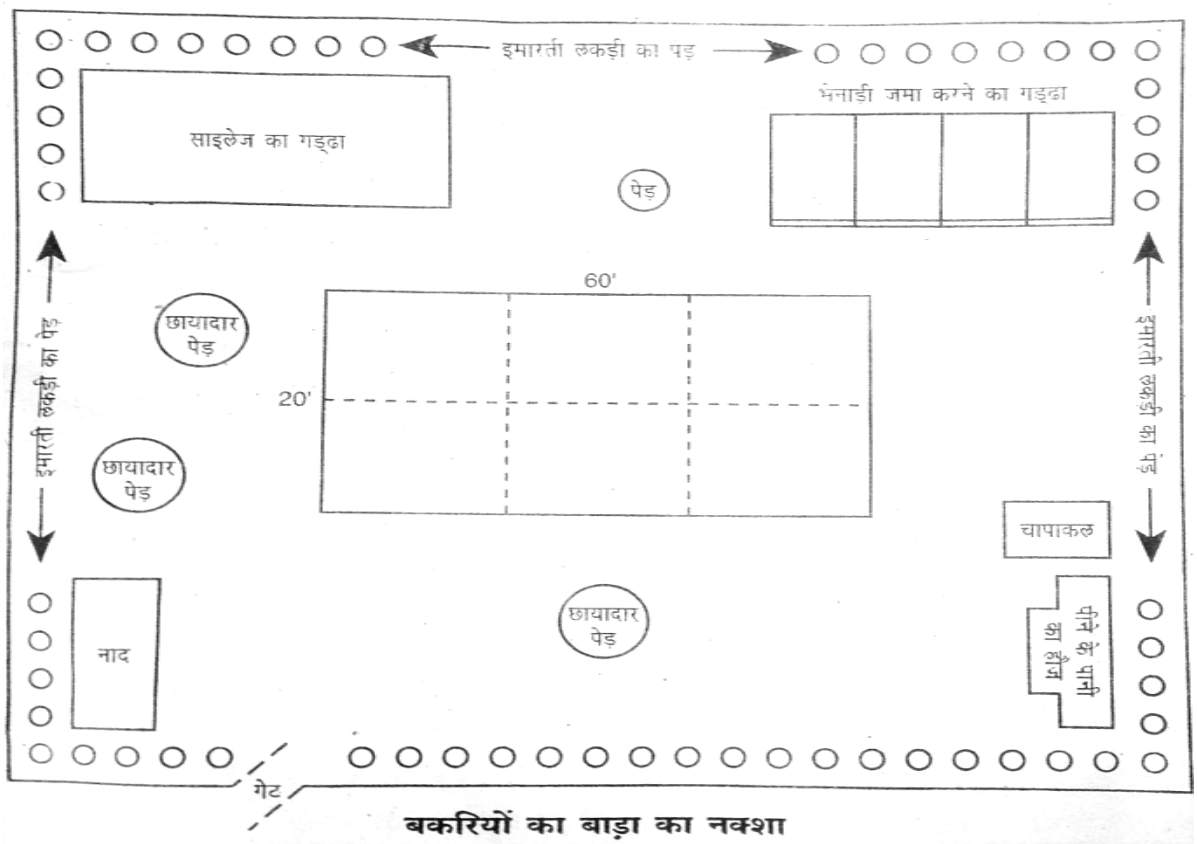

बकरियों का बाड़ा का नक्शा

नस्ल का चयन

कारोबार के लिए वैसी बकरियों का चुनाव करना चाहिए, जिनका कम समय में ही बेचने लायक पूर्ण विकास हो जाये। माँस उत्पादन हेतु ऐसी बकरियाँ पालें जो जल्दी–जल्दी और अधिक बच्चा देती हो, मृत्यु दर कम हो, माँस स्वादिष्ट हो तथा पालन–पोषण आसान एवं लाभकारी हो। बिहार में विशेष रूप से छः नस्ल की बकरियाँ पाली जा सकती हैं। ये हैं – बंगाल, गंजाम, बारबरी, बीटल, सिरोही और जामुनापारी।

cxky & यह काली, सफेद या बादामी रंगों की होती है। इसके पैर छोटे, कान नुकीले तथा कमर सीधी होती है। इसके वयस्क नर का वजन 18 से 20 किलोग्राम तथा मादा का वजन 15 से 18 किलोग्राम होता है। ये बकरियाँ 8 से 10 महीने मे वयस्क हो जाती हैं तथा औसतन 15 महीने में प्रथम बार बच्चे को जन्म देने लायक हो जाती हैं। इनकी प्रजनन क्षमता, माँस तथा चमड़े की गुणवत्ता अन्य

नस्लों की तुलना में बहुत अधिक है। अधिक बच्चों को जन्म देना इनकी विशेषता है। औसतन यह दो वर्ष में तीन बार बच्चा देती है एवं एक बियान में 3 से 4 बच्चे देती है। कुछ बकरियाँ एक वर्ष में दो बार और एक बार में 4–4 बच्चे देती हैं। इस नस्ल के बकरियों से उत्तम किस्म का मुलायम और स्वादिष्ट माँस प्राप्त होता है। इनका नाक छोटा, परन्तु उभरा और कान लम्बा होता है। ये बकरियाँ बंगाल, आसाम, उड़ीसा तथा बिहार में बहुतायत संख्या में मिल जाती हैं। बिहार की जलवायु इस नस्ल की बकरियों के लिए अनुकूल पाया गया है।

xtke & यह नस्ल उड़ीसा के गंजाम एवं पुरी जिले में पायी जाती है। ये साल में दो बार तथा एक बियान में 2 से 3 बच्चे जन्म देती हैं। इसका आकार छोटा तथा शरीर गठीला होता है। यह 22 से 25 महीने के आयु में बच्चा देने लायक होती है। इसकी सीगें टेढ़ी तथा पीछे की तरफ मुड़ी होती है। ये सफेद, बादामी और काले रंग की होती हैं। नर का वजन 35 किलोग्राम तथा मादा का वजन 28 किलोग्राम होता है।

chVy & यह नस्ल दूध और माँस दोनों दृष्टिकोण से अच्छी है और बड़ी आकार की होती है। वयस्क नर का वजन 55 से 60 किलोग्राम एवं मादा का वजन 45 से 55 किलोग्राम होता है। ये साल में एक

या दो बच्चा देती हैं। इनकी टाँगें लम्बी तथा शरीर का रंग काला, बादामी, सफेद, भूरा तथा सफेद पर धब्बेदार होता है। नाक उभरा हुआ तथा कान लम्बे–चौड़े लटके हुए होते हैं। कान की लम्बाई एवं नाक का उभारपन जमुनापारी की तुलना में कम होता है। सींग पीछे की तरफ घुमावदार होती है। जाँघ के पिछले भाग में कम घना बाल रहता है। इस नस्ल की बकरियाँ पंजाब के लुधियाना, अमृतसर, फिरोजपुर जिले तथा रावी नदी के आसपास मिलती हैं।

बीटल नस्ल के बकरों का प्रयोग अन्य छोटे तथा मध्यम आकार के बकरियों के नस्ल सुधार हेतु किया जाता है। यह नस्ल सभी जलवायु के लिए उपयुक्त पाया गया है।

ckjcjh & इस नस्ल की कुछ बकरियाँ मुख्यतः दूध के लिए पाली जाती हैं तथा माँस के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। ये मध्यम आकार की होती हैं। इनका रंग बादामी, हल्का बादामी व सफेद पर बादामी

धब्बेदार होता है। कुछ बकरियाँ काली या भूरी भी होती हैं। इसके कान पतले, छोटे और खड़े होते हैं।

इनकी सींग छोटी, चपटी और खड़ी होती है। ये नस्लें मथुरा, आगरा, अलीगढ़, इटावा जनपद में पाई जाती हैं। ये दो वर्ष में तीन बार बच्चों का जन्म देती हैं तथा 55 प्रतिशत बकरियाँ एक बार में दो या दो से अधिक बच्चें दे सकती हैं। इसके नर का वजन 36 से 45 किलोग्राम होता है तथा मादा का वजन 27 से 36 किलोग्राम होता है। ये 150 दिन के एक बियान में औसतन 120 किलोग्राम दूध देती हैं। इस नस्ल की बकरियाँ खूँटे से बाँधकर, गाय की तरह खिला–पिलाकर एवं शहरों में भी पाली जा सकती हैं।

flj kgh & ये मध्यम आकार और गठीले शरीर की होती हैं तथा माँस और दूध के लिए पाली जाती हैं। इनका रंग भूरा बादामी होता है, कुछ बकरियों के शरीर पर हल्के और गहरे रंग की भूरे एवं सफेद धब्बे

पाये जाते हैं। इस नस्ल की विशेष पहचान है कि कुछ बकरियों में गले के निचले भाग माँसल होती हैं, जिसे कलंगी कहते हैं। इनकी कान चपटे, पत्ती की तरह मध्यम आकार की होती हैं और नीचे की ओर झुके रहते हैं। इनकी सींग छोटी, घुमावदार और ऊपर की ओर मुड़ी हुई होती हैं। वयस्क नर लगभग

50 किलोग्राम और मादा 38 किलोग्राम की होती है। यह नस्ल राजस्थान के *fljkgh* जिला और गुजरात में पायी जाती है तथा बिहार के सुखाड़ क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। इस नस्ल की बकरियों को बिना चराये भी पाला जा सकता है।

teukikjh & ये सफेद रंग की होती हैं जिनके सिर, कान एवं गले पर बादामी रंग का धब्बा होता है। इनके नाक उभरे, कान लम्बे, लटके तथा जाँघों में पीछे की ओर लम्बे घने बालों का गुच्छा होता है,

सींग छोटा और चौड़ा होता है। इसके ऊपरी जबड़े, निचले जबड़े से छोटा होने के कारण तोता जैसी आकृति बनती है। वयस्क नर का औसत वजन 70 से 80 किलोग्राम तथा मादा का वजन 50 से 60 किलोग्राम होता है। ये उत्तरप्रदेश के इटावा जिले एवं गंगा, यमुना तथा चम्बल नदियों से घिरे क्षेत्रों में पायी जाती हैं। 90 प्रतिशत बकरियाँ एक बार में एक ही बच्चा देती हैं। ये मुख्य रूप से झाड़ियों एवं वृक्ष के पत्तों पर निर्भर रहती हैं। जमुनापरी नस्ल के बकरों का प्रयोग अपने देश के विभिन्न जलवायु में पाये जाने वाले अन्य छोटे तथा मध्यम आकार की बकरियों के नस्ल सुधार हेतु किया जाता है।

बिहार प्रांत की जलवायु के लिए उपरोक्त वर्णित नस्लों को पाला जा सकता है या यहाँ पाये जाने वाले बकरियों के नस्ल के सुधार हेतु बीटल, बारबरी, सिरोही एवं जमुनापारी के बकरे का उपयोग किया जा सकता है। इससे प्राप्त संकर नस्ल के बकरियों में बच्चा जनने और दूध देने की क्षमता बढ़ जाती है साथ ही एक बार में दो से ज्यादा बच्चे होने पर भी, अधिक दूध द्वारा इन्हें आसानी से पाला जा सकता है। इनकी मृत्यु दर भी कम होती है। संकर नस्ल की बकरियाँ बिहार के किसी भी क्षेत्र में पाली जा सकती हैं।

ek|l mRiknu d| fy, cdfj;k| e| fuEu x|.k| dk è;ku j[k|–

- कम उम्र में वयस्क होना।
- एक बार में ज्यादा बच्चे देना।
- ब्यात अन्तराल कम होना।

- शरीर की बनावट आयताकार हो और पेट तथा शरीर की ऊपरी सतह सीधी हो।
- बच्चों को पोषित करने के लिए आवश्यक दूध उत्पादन।
- खाद्य पदार्थों द्वारा शरीर के भार में ज्यादा परिवर्तन।
- उच्च गुणवत्ता के माँस और खाल उत्पादन।

n/k mRiknu d fy, cdfj;k e fuEu x.k dk è;ku j[k:–

- कम उम्र में वयस्क होना।
- शरीर का बनावट एंगुलर हो।
- संतति के माता–पिता को अधिक दूध देने की क्षमता होनी चाहिए।
- भोजन करने की अधिक क्षमता हो।
- लम्बी दुग्धकाल अवधि तथा कम शुष्ककाल अवधि का होना।

ऊपर बतायी गयी नस्लों की बकरी मिलने का पता –

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, पोस्ट – फराह, मथुरा, उत्तरप्रदेश–281122

दूरभाषः+91–565–2763380

E.mail: Director@cirg.res.in

Web: http://www.cirg.res.in

इसके अलावा स्थानीय बजारों एवं मंडियों से भी अच्छी नस्ल की बकरियाँ मिल जाती हैं।

****

आहार व्यवस्था

बकरी जुगाली करने वाली जानवर है। ये पूरा खाना एक बार में न खाकर हर समय थोड़ा–थोड़ा खाना पंसद करती हैं। आमतौर पर बकरी जंगल–झाड़ी और खेत–मैदान में घूम–घूमकर अपना पेट भरती है। इन्हे गाय की तरह 24 घंटा खूँटी से बाँधकर, अच्छा पोषक आहार खिलाकर भी रख सकते हैं। सिर्फ बारबरी और सिरोही नस्ल की बकरियाँ खूँटें से बाँधकर पाली जा सकती हैं।

cdjh ikyu dh rhu fof/k;k¡ gS&

1- *pjkdj ikyuk* – व्यावसायिक दृष्टिकोण से यह लाभकारी नहीं होता है क्योंकि इसमें बकरियों के वजन में अधिक वृद्धि नहीं होती है, जिससे बाजार में कीमत कम मिलती है। इस विधि से बकरी पालन जंगली तथा पहाड़ी इलाको में की जाती है, जहाँ खेती योग्य भुमि कम है।

2- *[kw¡V ij f[kykdj ikyuk &* इस विधि से केवल *ckjcjh vkSj fljksgh* नस्ल की बकरियों को बाँधकर पाला जा सकता हैं।

3- *pjkdj vkSj [kw¡V ij f[kykdj ikyuk &* इस विधि में बकरियों को 7 से 8 घंटे चरने दिया जाता है। इसके बाद बकरी घर में लाकर हरा–चारा, पत्तियाँ और दाना मिश्रण भी खिलाया जाता है। यह बकरी पालन की सबसे उत्तम विधि है। इसमें बकरियों के वजन में काफी वृद्धि होती है और स्वास्थ्य सही रहता है। इसलिए व्यवसाय में अधिक आमदनी और उचित बाजार मूल्य के लिए यही विधि अपनायें।

अधिक मुनाफे के लिए बकरियों के आहार का उचित प्रबंधन आवश्यक है। बकरी को मुख्य रूप से तीन प्रकार का चारा दिया जाता है– *gjk pkjk] lw[kk pkjk vkSj nkukA*

gjk pkjk – हरे चारे का विशेष महत्त्व है। जैसे – आनाज वाली फसलों से प्राप्त चारा, फलीदार हरा चारा, जंगली घास एवं पेड़–पौधों की पत्तियाँ, फलियाँ इत्यादि।

1. *flafpr {ks= esa gksus okys pkjs &*

cjlhe – यह रबी मौसम की प्रमुख चारा की फसल है। इसे अक्टूबर माह में बोया जाता है तथा पहली कटाई डेढ़ माह में होती है। 15 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करते हुए इससे 4–5 कटाई तक चारा ले सकते हैं। प्रति हेक्टेयर जमीन से 500 क्वींटल हरा–चारा मिलता है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 20 प्रतिशत तक होती है। इसे बकरी के दैनिक आहार में 50 प्रतिशत तक देना चाहिए।

yqlZu & यह एक बहुवर्षीय चारा है। इसे अक्टूबर माह में बोया जाता है तथा पहली कटाई 45 से 50 दिनों के बाद की जाती है। इसमें 7 से 8 सिंचाई कर प्रति हेक्टेयर 1000 क्विंटल तक हरा–चारा प्राप्त किया जा सकता है।

tMokyh Qly & जैसे गाजर व चुकुन्दर, को सामान्य मात्रा में थोड़ी सी चुन्नी मिलाकर देने से बकरियाँ बड़े चाव से खाती हैं। यह एक पौष्टिक आहार भी है।

cnxkHkh vkj QyxkHkh dh ifÙk;k & किसानों के खेत की यह उपफल बकरियों को बहुत पसंद हैं। इसके आलावा गाजर, मूली, शलजम एवं सब्जियों के पत्ते और रसोईघर के बचे खाद्य पदार्थ बकरियाँ बड़े चाव से खाती हैं।

2. *l[kkM {k=k e feyu okyk pkjk &*

vjgj & बकरियाँ अरहर की पत्तियाँ और फलियों को बहुत पसंद करती हैं।

tbl & यह रबी मौसम की चारा फसल है जिसकी बुआई के 45 दिनों के बाद पहली कटाई की जाती है। इसकी दुसरी कटाई, पहली कटाई के 30 दिनों के बाद करते हैं। दो–तीन कटाई में औसतन 500 क्विंटल हरा–चारा प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है।

ykfc;k & यह खरीफ की चारा फसल है, जो दुधारू बकरियों के लिए अति उत्तम है। प्रति हेक्टेयर क्षेत्रफल में औसतन 300 क्विंटल हरा–चारा प्राप्त किया जा सकता है। इसे ज्वार या बाजरा के साथ मिलाकर भी बोया जा सकता है।

ufi;j ;k gkFkh ?kkl & यह बहुवर्षीय सूखा प्रतिरोधक घास है, परन्तु बरसात के महीनों में अधिक फैलती है। इसे एक बार रोपने पर 5 से 6 वर्षों तक लगातार हरा–चारा मिलता रहता है।

fxuh ?kkl & यह भी एक सूखा प्रतिरोधक बहुवर्षीय घास है। जाड़े के मौसम में यह घास निर्जीव पड़ जाती है। इसे एक बार रोपने पर 3 से 4 वर्षों तक लगातार हरा–चारा मिलता रहता है। इसमें पोषक तत्व अधिक होते हैं और खाने में स्वादिष्ट होता है।

3- *ctj Hkfe e mxu okyk pkjk %*

अनुपजाऊ एवं बंजर भूमियों में सभी वृक्ष नहीं उगाये जा सकते हैं। ऐसे जगहों में कुछ विशेष वृक्ष और झाड़ी ही पनपते हैं। इन वृक्षों से भी उचित मात्रा में पत्ते एवं कोमल टहनियाँ बकरियों के लिए हरे चारे के रूप में उपयोग की जा सकती हैं। इनमें बबूल, शीशम, नीम, करंज, झरबेरी,खेजड़ी एवं अर्जुन के वृक्ष प्रमुख हैं।

4- *enkuh {k=k d o{k l feyu okyk pkjk %*

हरे चारे में वृक्षों की पत्तियों का भी विशेष महत्व है। मैदानी क्षेत्रों में भूमि की दशा अच्छी होने के कारण, यहाँ पनपने वाले वृक्ष, बकरियों के पोषण में काफी महत्व रखते हैं। इनमें मुख्य रूप से बरगद, गूलर, पीपल़, पाकुड़ एवं जामुन के पत्तों का उपयोग बकरियों के आहार में किया जाता हैं। ये सदाबहार वृक्ष हैं, जिनसे वर्ष के प्रायः सभी महीनों में चारा प्राप्त किया जा सकता है। इन्हें चारा के रूप में प्रति बकरी 2 से 3 किलोग्राम दिया जा सकता है।

चारा उत्पादन हेतु उपयोगी बातें

फसल	भूमि	प्रजातियाँ	बुआई का समय	बीज की मात्रा (कि.ग्रा./हे.)	दूरी (से.मी.)	खाद की मात्रा (कि.ग्रा./हे.)	सिंचाई (संख्या)	कटाई का समय (दिनों में)	कटाई प्रतिवर्ष	उपज (टन/हे.)
ज्वार (एक कटाई वाली फसल)	बलुई दोमट से चिकनी दोमट	पीसी–6, पीसी–9, पीसी–23	मार्च से जुलाई	25–30	30–40	नेत्रजन–60 फॉस्फोरस –30	3–4	80 से 90	एक कटाई	30–50
ज्वार (कई कटाई वाली)	बलुई दोमट से चिकनी दोमट	एच.सी.–171 एस.एस.जी.–998, 898, 555,	मार्च से जुलाई	25–30	25	नेत्रजन–60 फॉस्फोरस –30 एवं नेत्रजन – 30 प्रति कटाई	5–6	पहली कटाई 50 दिन, फिर 40 दिन के अन्तराल में	4–5	50–80
मक्का	बलुई दोमट से चिकनी दोमट	अफ्रिकन टॉल, विजय, मोती, जवाहर,	मार्च से अगस्त	40–50	30–40	नेत्रजन–80 फॉस्फोरस –40	3–4	60–70	1	35–55
बाजरा	बलुई दोमट	एल–72, 74, जाईन्ट बाजरा, ए. बी.के.बी.–19	अपैल से जुलाई	10	25–30	नेत्रजन–40 फॉस्फोरस –20	2–3	60–70	1	25–50
मक्चरी	बलुई दोमट से चिकनी दोमट	सिरसा, टी. एल.–1	अपैल से जुलाई	30–40	40–50	नेत्रजन–60 फॉस्फोरस –30	2–3	60	2	45–60
लोबिया	बलुई दोमट	यु.पी.सी. –4200, 5286, 287	अपैल से जुलाई	30–35	30–45	नेत्रजन–30 फॉस्फोरस –40	2–3	60–80	1	20–40
ग्वार	बलुई दोमट	एफ.एस. –277,एच. जी–75, 365, बुंदेल ग्वार–1,2,3	अपैल से अगस्त	25–30	30–35	नेत्रजन–80 फॉस्फोरस –40	2–3	60–75	1	17–30
बरसीम	दोमट से	वरदान, लुधियाना–1,	अक्टूबर से नवम्बर	20–25	छिड़काव विधि	नेत्रजन–30 फॉस्फोरस 80	5–6	प्रथम कटाई 60	6	70–110

Qly	Hkfe	iztkfr;k	cqvkbZ dk le;	cht dh ek=k ¼fd-xzk-@g0½	nwjh ¼l-eh-½	[kkn dh ek=k ¼fd-xzk-@g0½	flapkbZ ¼la[;k½	dVkbZ dk le; ¼fnuksa eas½	dVkbZ ifro"kZ	mit ¼Vu@g0½
	चिकनी दोमट	मेस्कावी, खादरावी, बुंदेल बरसीम–2, 3						दिनों पर उसके बाद 30 दिनों के अन्तराल पर		
लूसर्न	बलुई दोमट	आनन्द –2, 25, चेतक, एस.एस. –666, 627, लुसर्न टाईप –6	अक्टूबर से नवम्बर	20–25	छिड़काव विधि	नेत्रजन–30 फॉस्फोरस–40	7–8	7–8 (बहुवर्षीय)	4	80–100
जई	बलुई दोमट	जी.एच.ओ. –851, 822, 999, कैन्ट, यु.पी.ओ. –100, बुंदेल जई–851,	अक्टूबर से नवम्बर	80	20–25	नेत्रजन–80 फॉस्फोरस–40	3–4	पहली और दूसरी कटाई क्रमशः 45 और 30 दिनों के बाद	2	45–50
जौ	बलुई से दोमट	एच.बी.एल. –1, 87,	अक्टूबर से नवम्बर	80	20–25	नेत्रजन–60 फॉस्फोरस –30	1–2	पहली कटाई 60 दिनों के बाद उसके बाद 50 प्रतिशत फूल आने के बाद	2	20–25
सरसो	बलुई दोमट से दोमट	जपानी सरसो –6 , पूसा बोल्ड, टी–59	सितम्बर से अक्टूबर	6–8	30–40	नेत्रजन–40 फॉस्फोरस –20 पोटाश –20	2–3	50 प्रतिशत फूल की अवस्था में	1	20–30

l[kk pkjk & बबूल की सूखी पत्तियाँ, अरहर, चना, मटर का भूसा, मूँग व उरद की सूखी पत्तियाँ, बरसीम और लूसर्न का सूखा चारा बकरियाँ बहुत चाव से खाती हैं। गेंहूँ का भूसा सानी में मिलाकर खिलाने से भूसे के स्वाद में बढ़ोत्तरी होती है और बर्बादी कम होती है। सूखा चारा हर रोज बकरी को खिलाने से इसका पाचन संस्थान ठीक रहता है।

nkuk& बकरियों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए हरा एवं सूखा चारा के साथ–साथ दाना का मिश्रण देना जरूरी है। दाना मिश्रण मकई, जौ, गेूहूँ या जई के साथ खल्ली मिलाकर तैयार किया जाता है। इसमें प्रोटीन, विटामिन और खनिज लवण भरपूर मात्रा में होने के कारण यह संतुलित आहार होता है। आहार की मात्रा बकरी के वजन, उम्र और स्थिति पर निर्भर करती है। दुधारू बकरी को बरसीम और लूसर्न घास देने से ज्यादा पोषण मिलता है। आहार में हरा–चारा, सूखा चारा एवं दाना लगभग 15, 65 एवं 20 प्रतिशत होना चाहिए।

tUe l rhu ekg rd d eeuk d vkgkj & पहले से चौथे या सातवें दिन तक बच्चों को फेनुस या खीस की भरपूर मात्रा पिलायें। इससे बच्चों को घूमने–फिरने तथा अन्य क्रियाओं के लिए आवश्यक उर्जा मिलती है। यह बच्चों को जानलेवा बीमारियों से भी बचाता है। दिन में केवल दो या तीन बार ही दुध पीने दें। पंद्रह दिन की उम्र के बाद बच्चों को शुरूआती दाना खिलाना शुरू कर दें। इसको *LVkVj* कहते है। *LVkVj* दाना बनाने का फार्मूला निम्न प्रकार है। –

1. मकई – 32 प्रतिशत
2. खल्ली(सरसों, तीसी, मूँगफली) – 35 प्रतिशत
3. गेहूँ का चोकर – 20 प्रतिशत
4. फिश मील – 10 प्रतिशत
5. खनिज लवण – 2.5 प्रतिशत
6. नमक – 0.5 प्रतिशत

ऊपर बतायी गयी सामग्रियों का दर्रा बनाकर उचित मात्रा के अनुसार आपस में मिला दें। दाना तैयार करते समय ध्यान रखना है कि सामग्री पुराना या फफुँदी लगा न हो।

0&3 ekg d eeuk d fy, vkgkj rkfyd k

me ¼fnuk e½	*'kkfjfjd Hkkj ¼fd0xk0½*	*[kku&iku dh vko`fÙk*	*n/k ¼fe0yh0½*	*gjk pkjk*	*LVkVj vkgkj*
0–7	1–3	2–3 बार	इच्छानुसार	–	–
8–15	3–4	2 बार	250–300	–	इच्छानुसार
15–30	4–5	2 बार	300–350	इच्छानुसार	इच्छानुसार
31–60	5–7	2 बार	300–400	इच्छानुसार	इच्छानुसार
61–90	7–10	2 बार	200	इच्छानुसार	इच्छानुसार

pkj l N% eghuk d eeuk dk vkgkj & बढ़ती हुई बकरी को अगर दलहनी चारा यानी मसूर, मूँग, अरहर आदि की पत्तियाँ उपलब्ध न हो तो दाना देकर इसकी पूर्ति करनी चाहिए। अच्छे किस्म के हरा–चारा जैसे – *cjlhe] ylu] ykfc;k e ikVhu dh ek=k vf/kd gkrh g]* जो मेमनों के वृद्धि में बहुत सहायता करती है। दाना की सामग्री एवं मात्रा इस प्रकार रखें –

1. चना/मसूर – 15 प्रतिशत
2. मकई – 37 प्रतिशत
3. खल्ली – 25 प्रतिशत
4. गेहूँ का चोकर – 20 प्रतिशत
5. खनिज लवण – 2.5 प्रतिशत
6. नमक – 0.5 प्रतिशत

इस समय इच्छानुसार सूखा एवं हरा चारा के साथ–साथ प्रति बकरी 1.00 किलो से 1.50 किलो दाना प्रति माह खिलाना अवश्यक है।

lkr l nl ekg rd d eeuk d vkgkj & इस समय जो दाना खिलाया जाता है उसे *fQfu'kj nkuk* कहते हैं। सूखे एवं हरे–चारे के अलावा प्रति बकरी 1.5 से 3.0 किलो दाना प्रति माह आवश्यक होता है। कम खर्च में दाना बनाने का फार्मूला निम्न प्रकार है –

1. गेहूँ की खुद्दी – 22 प्रतिशत
2. खल्ली – 30 प्रतिशत
3. गेहूँ का चोकर – 30 प्रतिशत
4. अरहर या किसी दाल की चुन्नी – 15 प्रतिशत
5. खनिज लवण – 2 प्रतिशत
6. नमक – 1 प्रतिशत

या

1. बाजरा – 38 प्रतिशत
2. खल्ली – 35 प्रतिशत
3. चावल का कुंडा – 20 प्रतिशत
4. अरहर या किसी दाल की चुन्नी – 14 प्रतिशत
5. खनिज लवण – 2 प्रतिशत
6. नमक – 1 प्रतिशत

या

1. मकई का दर्रा – 37 प्रतिशत
2. चोकर – 10 प्रतिशत
3. दाल की चुन्नी – 10 प्रतिशत
4. धूप में सुखाई गयी मुर्गी की बीट – 10 प्रतिशत
5. खनिज लवण – 2 प्रतिशत
6. नमक – 1 प्रतिशत

4 ls 12 ekg ds eseuks dh vkgkj rkfydk

me ¼ekg½	nkuk feJ.k ¼xzke½		gjk pkjk ¼fd0xzk0½		lw[kk pkjk
	NkVh uLy	cM+h uLy	NkVh uLy	cM+h uLy	
3	150	200	इच्छानुसार	इच्छानुसार	इच्छानुसार
4	200	250	इच्छानुसार	इच्छानुसार	इच्छानुसार
5	225	275	इच्छानुसार	इच्छानुसार	इच्छानुसार
6	250	300	इच्छानुसार	इच्छानुसार	इच्छानुसार
7	275	325	इच्छानुसार	इच्छानुसार	इच्छानुसार
8	300	350	इच्छानुसार	इच्छानुसार	इच्छानुसार
9	300	350	इच्छानुसार	इच्छानुसार	इच्छानुसार
10	300	350	इच्छानुसार	इच्छानुसार	इच्छानुसार
11	300	350	इच्छानुसार	इच्छानुसार	इच्छानुसार
12	300	350	इच्छानुसार	इच्छानुसार	इच्छानुसार

xkfHkZu cdjh dk vkgkj

बकरी पालन की व्यावसायिक सफलता, मादा पशु की प्रजनन क्षमता एवं उसके सतत् प्रजनन चक्र पर निर्भर करती है। सुचारू प्रजनन चक्र के लिए उन्हें उचित पोषण देना आवश्यक है। बकरी का xHkkZdky 5 ekg का होता है। ब्याने की तिथि से लगभग 60 दिन के बाद बकरी को दोबारा प्राकृतिक या कृत्रिम गर्भाधान द्वारा गाभिन करा देना चाहिए। गाभिन कराने के तुरन्त बाद 15–20 दिन तक 200–300 ग्राम दाना मिश्रण तथा 300–400 ग्राम हरा–चारा भूसे में मिलाकर प्रतिदिन देना चाहिये। गर्भावस्था के अंतिम दो महीने पोषक तत्वों की आवश्यकता बढ़ जाती है। इस समय गर्भ में शिशु की वृद्धि तीव्र गति से होती है, इसलिये इस समय अतिरिक्त पोषक तत्व, ऊर्जा, प्रोटीन और विटामिन शिशु की सामान्य वृद्धि और माँ के उचित शरीर भार बनाये रखने के लिये आवश्यक होता है। पोषक तत्वों की उचित मात्रा से प्रसव उपरान्त खीस और दूध के उत्पादन में वृद्धि होती है। अतः इस दौरान बकरी को अच्छे किस्म का हरा–चारा खिलायें। vkdkj ds eqrkfcd dqy [kjkd dk yxHkx ikpok Hkkx rd nkuk nsA

बकरी के आहार में अचानक से कोई परिवर्तन नहीं करना चाहिए। बरसीम या लूसर्न को प्रारम्भ में कम मात्रा में देना चाहिए। धीरे–धीरे इसकी मात्रा को बढ़ाना चाहिये नहीं तो अफरा (ब्लोट) होने की संभावना बढ़ जाती है। हरे चारे को भूसे के साथ खिलाना ठीक रहता है। बकरी को गर्भावस्था के आखिरी 10 दिनों उसके आवास से बहुत दूर नहीं ले जाना चाहिए।

pkjkxkg ugh Hkth tkus okyh xkfHku cdfj;k dh vkgkj rkfydk

vkgkj ¼xke ea½	0&2 ekg		2&3-5 ekg		3-5 & 5 ekg	
	NkV	cM	NkV	cM	NkV	cM
दाना मिश्रण	200	300	300	400	400	500
भूसा	400	600	400	600	500	800
हरा चारा/वृक्ष की पत्तियाँ	1000	1200	1000	1200	1200	1500

pjk;s tkus okys xkfHku cdfj;k dh vkgkj rkfydk

vkgkj ¼xke ea½	0&2 ekg		2&3-5 ekg		3-5 & 5 ekg	
	NkV	cM	NkV	cM	NkV	cM
दाना मिश्रण	200	250	250	350	300	400
भूसा	300	500	400	600	500	700
हरा चारा/वृक्ष की पत्तियाँ	5–6 घंटे					

दाना मिश्रण की कुल मात्रा एक साथ खिलाने से बकरी में *vEyrk tfur dcikpu* या *,UVjkVkfDlfe;k* रोग हो सकता है। अतः दाना मिश्रण को दो या तीन भागों में विभाजित कर ही देना चाहिए।

n/kk: cdjh dk vkgkj& दुधारू बकरी को सामान्य बकरी से ज्यादा पौष्टिक और संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। साधरणतः एक दुधारू बकरी दिन में 3–4 किलो हरा चारा और सूखा चारा खा लेती है। इसके अलावा एक किलो दूध उत्पादन पर 300 ग्राम दाना देना चाहिए। दाना की मात्रा को दिन में दो बराबर भागो में बाँट कर दें।

cdjk dk vkgkj & प्रजजन में काम आने वाले बकरे को अच्छा एवं संतुलित आहार की जरूरत होती है। ऐसे बकरे आमतौर पर चरने नहीं जाते हैं। इसलिए बकरों को हरा और सूखा चारा के अलावा 400 से 600 ग्राम तक दाना प्रतिदिन देना आवश्यक है।बकरा जब उपयोग में नही लाने का समय हो तो आहार की मात्रा कम कर सकते हैं।

cdfj;k d pkjk&ikuh f[kyku e dN lko/kkfu;k j[kuh pkfg, &

- सभी हरे चारे को बंडल बनाकर लटकाकर खाने दें।
- चारा रोजाना थोड़ा–थोड़ा तीन–चार बार में दें।
- गीली घास कभी भी न दें।
- साफ एवं ताजे पानी पिलायें।

सामान्य मौसम में एक 20 किलो वजन की बकरी को लगभग 700 मिली लीटर पानी की आवश्यकता होती है। गर्मी के मौसम में इससे डेढ़ गुणा पानी देना आवश्यक है।

cdfj;k d otu dh tkp & समय–समय पर बकरियों के वजन के जाँच करने से उनके सही

प्रबंधन का पता चलता है। एक बोरा या रस्सी के बने हुए थैले में बकरी को उठाएं और काँटा पर लटकाते जायें। काँटे के घड़ी की सुई इनका वजन बताएगी। उम्र बढ़ते जाने पर, नस्ल के हिसाब से बकरी का वजन निम्न तालिका के अनुसार बदलता है –

uLy	*tUe d le; ¼fdyksxzke½*	*3 ekg d me e ¼fdyksxzke½*	*6 ekg d me e ¼fdyksxzke½*	*12 ekg d me e ¼fdyksxzke½*
बारबरी	1.75	7.25	12.75	21.00
बीटल	3.00	8.50	12.50	22.50
बंगाल / गंजाम	1.33	4.75	7.00	12.50
सिरोही	2.75	10.00	14.00	22.00
जमुनापरी	3.00	8.50	12.50	22.00

*****

विभिन्न मौसम में बकरियों का रखरखाव

हमारे देश की जलवायु वर्ष भर एकसमान नहीं रहती है। जलवायु परिवर्तन के अनुसार विभिन्न मौसम में बकरियों के रखरखाव लिए अलग–अलग तरह से प्रबंधन करना आवश्यक है। *bue vf/kdrj jkx tyok;q ifjorZu d dkj.k gkrh gSA* शीतकालीन मौसम में निमोनियाँ एवं जुओं का प्रकोप अधिक होता है, जबकि वर्षा ऋतु में गलाघोंटू की बीमारी तथा चिमोकन प्रमुख रूप से होता है। विभिन्न मौसम में चारे की उपलब्धता बकरी की उत्पादकता को भी प्रभावित करती है। एक सफल बकरी पालक को बकरियों में होने वाली शारीरिक क्रियाओं पर विभिन्न मौसम का प्रभाव तथा उन क्रियाओं के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने के लिए आवश्यक उपायों की जानकारी होना अति आवश्यक है।

1- 'khr _rq esa cdfj;ksa dk j[kj[kko &

- बच्चों के बाड़े में घास–फूस का प्रयोग करें।
- रोशनदान तथा आवास के खुली दीवारों से आने वाली ठंडी हवा को रोकने की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।
- शीत ऋतु में जुओं तथा चिमोकन का प्रकोप अधिक होता है जिसके लिए 2 एम0एल0 बुटॉक्स/टिकटैक दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर लगायें फिर आधा घंटा मे साफ पानी से धो दें, साथ ही उचित रोगाणुरोधी दवाएं मालाथियोन/साइपरमेथ्रीन 0.5 प्रतिशत आदि का फर्श तथा दीवारों पर छिड़काव करें।
- *dkDlhfM;kfll* से बचाव हेतु *,eikfy;e* इत्यादि दवाओं का उचित प्रयोग करें। बच्चों को मिट्टी खाने से बचाऐं। उन्हें मिट्टी खाने से रोकने के लिए 10 सेंटीमीटर मोटे बिछावन का प्रयोग करें। यह बिछावन इसे ठंड से भी बचाती है।
- छोटे मेमनों को धूप निकलने पर प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक ही बाहर खुले में रखें।
- खुरपका–मुँहपका रोग (*FMD*) से बचाव हेतु जनवरी माह में *FMD* का टीका आवश्य लगायें।
- इस मौसम में नीम, अरडू तथा खेजड़ी के चारे का उपयोग किया जा सकता हैं।
- अधिक नमी वाले चारे को सीमित मात्रा में खिलायें। बरसीम के हरे चारे को खिलाने के पूर्व, इसे कुछ समय के लिए धूप में फैलाकर, इसकी नमी को कम कर लेना फायदेमंद होता है।

2. *xh"e _r| e| cdfj;k| dk j[kj[kko &*

ग्रीष्म ऋतु बकरियों के लिए सबसे अनुकूल रहती है, क्योंकि इस मौसम में आवास भी सूखे रहते हैं तथा उनके चरने के लिए उपलब्ध चारा भी भींगा हुआ नहीं रहता, जिसे वे काफी पसन्द करते हैं।

- *;g ek|le ckM| dh feVVh cnyu|* का सर्वोत्तम समय होता है। 10 से0मी0 से 15 से0मी0 गहराई तक की पुरानी मिट्टी हटाकर नई सूखी मिट्टी, 10 किलोग्राम चूना मिलाकर प्रति घनफीट की दर से भरें।
- बकरियों को पीने के लिए साफ पानी प्रचूर मात्रा में उपलब्ध करायें। साथ ही बाड़े में छाया की भी व्यवस्था करें।
- इस मौसम में *ih|y] uhe] 'kgr|r] cjh] cc|y] l|cc|y] x|yj] cjxn] dVgy* आदि वृक्षों का चारा बकरियाँ खूब पसन्द करती हैं। इसके अलावा कुछ झाड़ियाँ जैसे– *>jc|jh] [kTkMh] ddMk] fgxk|j* इत्यादि झाड़ियाँ भी चराई जा सकती हैं।
- चारागाह को 3 से 4 बराबर भागों में बाँट कर *pØor* चराई कराते हुए बकरियों को सीमित समय के लिए चरायें।
- *Qjojh l| ekp|* में चारा फसलें जैसे – *eDdk] ck|tjk rFkk ykfc;k* की बुआई करें।
- बाह्य परजीवियों के निदान हेतु उचित दवाओं का प्रयोग करें।
- स्थिर रहने वाली पानी जैसे– तालाब के पानी में अनेक प्रकार के जीवाणु संक्रमित रहते हैं, जिनसे कई प्रकार की बीमारियाँ हो सकती हैं, उन्हें कभी भी यह पानी पीने न दें।
- तालाब तथा अन्य पानी भरे गड्ढ़ों के किनारे उपलब्ध घास को चरने न दें, अन्यथा बकरियाँ घास के साथ घोंघे भी खा लेगें जो *yhoj ¶y|d* नामक बीमारी उत्पन्न करती है।
- इस ऋतु में बकरियाँ सर्वाधिक संख्या में गर्मी में आती हैं। अतः कमजोर बकरियों को विशेष पूरक आहार दे कर सभी बकरियों को सही समय पर गाभिन करायें।

3. *o"kk| _r| e| cdfj;k| dk j[k&j[kko &*

- इस मौसम में बाड़े को सूखे रखने तथा सूखे चारे की व्यवस्था अति आवश्यक है। बाड़े में नमी का अनुमान होते ही इसमें चूना 100 ग्राम प्रति वर्ग मीटर क्षेत्रफल के हिसाब से भुर्काव करें। अधिक नमी रहने पर बकरियों के बैठने के लिए जमीन से कुछ ऊँचाई पर लकड़ी के फट्ठों से बाड़ा बना सकते है।

- बकरियों को वर्षा में भींगने न दें। अतः इस मौसम में उन्हें आवास के आसपास ही चरायें ताकि ये तुरन्त ही बाड़े में लौट सकें। इन्हें जल भराव वाले स्थानों पर न चरायें।
- बकरियाँ भींगा हुआ चारा नहीं पसन्द करती हैं। इसलिए आवश्यकतानुसार सूखा चारा तथा दाना का भण्डारण पहले से कर लें।
- *[kjhQ ekl e* में उगाये जाने वाले चारे जैसे– *Tokj] ykfc;k] vjgj* की बुआई करें।
- जुलाई माह में खुरपका–मुँहपका रोग ¼*,Q0,e0Mh0*½ से बचाव हेतु *,Q0,e0Mh0* का टीका अवश्य लगायें।
- अन्तः कृमि तथा बाह्य कृमि के निदान हेतु उचित दवा का प्रयोग करें।
- सितम्बर–अक्टूबर माह में पैदा होने वाले बच्चों के आवास की तैयारी के लिए बाड़े की मिट्टी बदलकर उसमें 100 ग्राम चूना प्रति वर्ग मीटर के हिसाब से मिलायें। उसके बाद बिछावन के लिए सूखी, मुलायम घास का उपयोग करें।

*****

<u>विभिन्न अवस्थाओं में बकरियों की देखभाल</u>

गाभिन बकरियों और नवजात मेमनों को विशेष देखभाल की जरूरत होती हैं। ये व्यावसायिक बकरी पालन हेतु बहुत ही आवश्यक है।

xkfHku cdfj;k dh n[kHkky &

स्वस्थ मेमनों के उत्पादन हेतु गाभिन बकरियों की देखभाल आवश्यक है। बच्चों के शारिरिक विकास पर उनकी माँ को गर्भ तथा दूध देने की अवस्था में दिये गये आहार का विशेष प्रभाव पड़ता है। अनुकूल स्वास्थ्य के लिए इन्हें थोड़ा चराना भी चाहिए, जिससे उनका व्यायाम होता रहे है।

बकरी के गर्भाधन की तिथि लिखकर रखें, इससे प्रसव के दिन का अंदाजा लगा सकते हैं। प्रसव के 15 दिन पहले उसका बाड़ा/कमरा तैयार कर लें। बाड़ा को फिनाइल का घोल छिड़ककर साफ कर लें। फर्श पर घास या पुआल डालकर बिस्तर तैयार कर लें। प्रसव के 4–5 दिन पहले ही बकरी को उस बाड़ा में ले आऐं। इस दौरान उसे चराने के लिए दूर न ले जाऐं।

प्रसव का समय आना उसकी पीड़ा से पता चलता है। बकरी बेचैन हो जाती है। बार–बार बैठती है, खड़ी होती है। थोड़ा–थोड़ा करके अनेक बार मूत्र त्याग करती है। बार–बार शरीर के पिछले भाग की ओर देखती है। बकरियों में प्रसव काल दो–तीन घंटे की होती हैं तथा बच्चा देने के एक या दो घंटे बाद वह *tj ¼IyklVk½* गिरा देती है। जेर गिरते ही उसे हटाकर कहीं मिट्टी में दबा दें। बकरी उसे खा न ले। प्रसव के बाद गुनगुने पानी में *ikVf'k;e ijexuV* की दवा मिलाकर बकरी के थन और पिछले भाग को धो दें।

जाड़े के दिनों में माँ और बच्चे दोनों को ठंड से बचाएं। प्रसव के तुरन्त बाद बकरी को आधा लीटर गर्म पानी में 100 ग्राम गुड़, थोड़ी सी बार्ली/दलिया, एक चम्मच नमक और 50 ग्राम अदरक मिलाकर शरबत बनाकर पिलायें। 2–3 घंटे बाद, 200 ग्राम गेहूँ का चोकर खिलाएं। बकरी को प्रसव के 3–4 दिनों बाद अन्य बकरियों के साथ चरा सकते हैं।

uotkr eeuk dh n[kHkky &

जन्म के तुरन्त बाद बच्चे के शरीर पर लगी हुई झिल्ली को हटाकर साफ एवं मुलायम कपड़े से सफाई करें। सबसे पहले मुँह–नाक के पास की सफाई करें ताकि बच्चा ठीक से साँस ले सके। साँस लेने में कठिनाई होने पर बच्चे को जमीन पर लिटाकर उसके आगे के पैरों को पकड़कर धीरे–धीरे ऊपर–नीचे करें। अगर *uky rhu bp* से लम्बी हो तो नाल को शरीर से जुड़े हुए स्थान से *nk bp uhp* साफ धागे से कसकर बाँध दें। उसके बाद बंधे हुए स्थान से लगभग 2 से0मी0 नीचे नये ब्लेड से काट दें। कटे हुए स्थान पर *fVpj vk;kfMu* लगावें।

जन्म से आधे घंटे के अन्दर ही मेमनों को उसकी माँ का पहला दूध, *[khl@Qul* पिलाना आवश्यक है। शरीर भार के हिसाब से दस प्रतिशत खीस *fnu e rhu ckj] rhu fnu rd* अवश्य

पिलायें। उसके बाद, दिन भर में दो बार पिलायें। खीस में dfYl;e] foVkfeu vkj ,Vhck;kfVd अर्थात् रोग प्रतिरोधक शक्ति रहती है जो मेमनों के स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक होती है। यह अनेक बीमारियों से बचाता है तथा पेट की सारी गंदगियों को बाहर निकाल देता है।

जब मेमनें दो सप्ताह का हो जाए तब उन्हें थोड़ी–थोड़ी घास दें। माँ का दूध दो बार पिलायें। उसे Øhi@LVkVj nkuk देना भी शुरू कर दें। तीन माह की उम्र के बाद उसे दूध पिलाना बन्द कर देना चाहिए।

पहचान के लिए जन्म के तुरन्त बाद मेमनों के गले में रस्सी लगाकर, नम्बर टॉग दें या 1 प्रतिशत flYoj ukbVV के घोल से उनकी पीठ पर नम्बर लगा दें। एक माह का होने पर कान में VVkbx मशीन द्वारा नम्बर लगा दें। छोटे बच्चों को अपनी माँ/वयस्क बकरियों के सम्पर्क से जहाँ तक सम्भव हो दूर रखें, ताकि उनकी मैगनी से बच्चे का चारा, दाना व पानी सक्रंमित न हो। इनसे संक्रमित चारा, दाना, पानी पीने से dkDlhfMvkfll नामक बीमारी का प्रकोप बढ़ जाता है। मेमनों को रहने हेतु साफ–सुथरे व हवादार बाड़े होनी चाहिए। दाने के प्रयोग की मात्रा, मेमनों के शारिरिक भार के 1.5 से 2 प्रतिशत तक ही रखें।

xHkk/kku dh r;kjh &

मादा मेमनों की अच्छी देखभाल करने से 7 से 10 महीने में उसका पूर्ण विकास हो जाता है और वे माँ बनने लायक हो जाती हैं। नर मेमना 10 से 12 महीने में बच्चा पैदा करने योग्य हो जाता है। अच्छे लाभ के लिए मेमनों को 12 माह के बाद गाभिन करना चाहिए और नर मेमना को 15 माह के बाद उपयोग में लाना चाहिए। बच्चा देने के दो माह बाद मादा बकरी गर्भाधन के लिए तैयार हो जाती है। प्रसव के 70 दिन के अन्दर गर्भाधन कराने से गाभिन होने का प्रतिशत 60 तक हो सकता है। मादा बकरी दस वर्ष तक प्रजनन योग्य रहती है, यद्यपि 5 वर्ष तक उसकी उत्पादन क्षमता अधिक रहती है। धीरे–धीरे यह क्षमता कम होने लगती है। उसी तरह 5 वर्ष से अधिक आयु के नर का भी उपयोग नहीं करना चाहिए। प्रजनक बकरों को हमेशा मादाओं के समूह से दूर रखना चाहिए। पूरे प्रजनन ऋतु में नरों को 400 से 500 ग्राम दाना प्रतिदिन खिलाना चाहिए।

xHkk/kku &

गर्मी में आयी बकरियों की पहचान उसके कुछ लक्षणों जैसे–मादा बकरी में उत्तेजना, पूँछ हिलाना, दूसरी बकरियों पर चढ़ना, दूध की मात्रा कम होना आदि से की जा सकती हैं। ये सारे लक्षण एक साथ नहीं दिखाई देते हैं। बकरियों के समूह में बकरे को सुरक्षित तरीके से घुमाकर भी गर्मी में आयी बकरियों का पता कर सकते हैं।

गर्मी के दिनों में मादा बकरियों में xeh rhu fnuk तक रहती है। अन्य मौसम में 24 से 36 घंटे तक गर्मी रहती है। लजालु किस्म की बकरियां में गर्मी की अवधि पता नहीं चल पाती है। ऐसी बकरियों को ध्यानपूर्वक देखते रहना चाहिए। शाम को गर्मी में आयी बकरी को अगले दिन सुबह गर्भित कराना चाहिए तथा सुबह गर्मी में आयी बकरी को शाम में गर्भित कराना चाहिए। बकरियों में xHkkoLFkk

145 l 152 fnuk की होती हैं। औसतन यह 150 दिन बाद बच्चा देती है। प्रति बियान मेमनों की संख्या औसतन *ckjcjh uLy e 1-8* तक, *cxky uLy e 3, xte e 2&3* तथा *fljkgh e 1* होती है। *,d l rhu eghu rd dh vk;q e eeuk e eR;q nj vf/kd jgrh gA* इस दौरान अच्छी देखभाल करने से मृत्युदर में प्रयाप्त कमी लायी जा सकती है।

nl eknk cdfj;k d vuqikr e ,d uj cdjk ¼10%1½ j[kuk pkfg,। प्रति छः माह पर *de ituu {kerk* वाले बकरियों की छंटनी कर, बेच देनी चाहिए।

c/;kdj.k &

रेवड़े से जिन नर बकरों को प्रजनन कार्यों में उपयोग के लिए नहीं रखते हैं, उनका बंध्याकरण 2–4 सप्ताह की उम्र में ही कर देना चाहिए। नर बच्चों को बधिया करने पर उनमें माँस की मात्रा तथा गुणों में वृद्धि होती है। बधिया कराये गए नर का माँस दूसरों के अनुपात में ज्यादा मुलायम एवं स्वादिष्ट होता है।

*****

रोग तथा उनसे बचाव

अन्य जानवरों के तुलना में बकरियों में रोग का खतरा कम होता है, परन्तु रोग के संक्रमण से फैलने का खतरा रहता है। बकरियाँ बीमार न पड़े इसके लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दें–

- बाड़ों की प्रतिदिन नियमित रूप से सफाई करनी चाहिये तथा गन्दगी को बाड़ों से काफी दूर गड्ढ़ों में दबा देनी चाहिये।
- बाड़ा में जरूरत से ज्यादा बकरी न रखें।
- मेमनों को बड़े बकरियों से अलग रखें ताकि उनकी मेगनी से संक्रमित दाना/पानी से मेमनों को *dkDlhfM;kfll* नामक बीमारी से बचाया जा सके।
- सभी बकरियों को नियमित रूप से समय पर टीका लगवायें।
- बाड़े में नमी दूर रखने के लिए नियमित रूप से *c|k puk] lIrkg e de ls de ,d ckj* अवश्य छिड़काव करना चाहिए।
- बाड़े के सभी बकरियों को एक साथ एक ही दिन कृमिनाशक दवा पिलायें।
- चमोकन और जूँ से बचाव करें।
- रोग से बचाव के लिए बकरियों को नियमित रूप रोगनाशक दवा पिलाएँ।
- रोग्रस्त पशु को अलग रखकर उसका उपचार पशु चिकित्सक के निर्देशानुसार करें।
- प्रतिवर्ष बाड़ों के जमीन की मिट्टी कम से कम 1 इंच तक खोदकर निकालने तथा नई साफ मिट्टी भरने से संक्रमण की सम्भावना कम हो जाती है।
- बकरियों को नमी युक्त चरागाहों, तालाबों, नदियों व बाँधों के आसपास नहीं चरानी चाहिए तथा पीने के लिए स्वच्छ व ताजा कुऐं या हैंड पम्प का पानी ही दें।
- बकरियों को पौष्टिक तथा खनिज पूरित आहार अवश्य दें।
- खूँटे पर बाँधकर पालने की स्थिति में नियमित व्यायाम के लिए बकरियों को अवश्य घुमायें।
- नियमित रूप से स्वास्थ्य कार्ड भरना चाहिए।

Vhdkdj.k

बकरियों में कुछ संक्रामक बीमारियाँ होती हैं जिनसे बकरी पालक को काफी नुकसान उठाना पड़ता हैं। इन रोगों से बचाव के लिए बकरियों में नियमित रूप से टीके लगवाएँ। टीका कब और कैसे लगायें, इसकी सूची इस प्रकार है–

Vhdkdj.k rkfydk

jksx	izkjfEHkd Vhdkdj.k		fu;fer Vhdkdj.k
	iFke Vhdk	cLVj Vhdk	
खुरपका–मुँहपका रोग(एफ0एम0डी0)	2–3 महीने की उम्र	प्रथम टीका के 4 माह बाद	प्रत्येक 6 माह पर मार्च अप्रैल तथा सितम्बर अक्टूबर माह में
बकरी प्लेग (पी0पी0आर0)	4 महीने की उम्र	आवश्यक नहीं	4 वर्ष
गलाघोंटू	3 महीने की उम्र	प्रथम टीका के 6 माह बाद	प्रति वर्ष मई–जून माह में
बी0क्यू0 (जहरबाद)	3 महीने की उम्र	प्रथम टीका के 6 माह बाद	प्रति वर्ष मई –जून माह में
बकरी चेचक	3–5 महीने की उम्र	प्रथम टीका के 1 माह बाद	12 महीने में
आत्रा विषाक्तता (इन्टेरोटॉक्समियाँ)	3 महीने की उम्र	प्रथम टीकाकरण के 3 सप्ताह बाद दूसरा टीका	12 माह बाद से टीके के 3 सप्ताह के अन्तराल पर दूसरा टीका

टीकाकारण गर्दन की चमड़ी या माँस पर, टीका उत्पाद के निर्देशित विधि तथा मात्रा से करनी चाहिए। टीकाकरण करने से इन बीमारियों के होने की सम्भावना कम हो जाती है।

d`fegj.k

बकरियों के लिए कृमिहरण कार्यक्रम आवश्यक है, क्योंकि पेट में कीड़ा होने से भूख कम हो जाती है, कभी दस्त तो कभी कब्ज होता है तथा वे कमजोर बनी रहती हैं। कृमि का प्रकोप बहुत सी बीमारियों की जड़ बन सकती है। इससे बचाने के लिए नियमित कृमिहरण कार्यक्रम चलाते रहना चाहिए।

d`fegj.k rkfydk

d`fe jksx	mez	lsou djkus dh vof/k	fo'ks"k
कॉक्सीडियोसिस	2–3 माह पर 3–5 दिन तक	बरसात के प्रारम्भ तथा अन्त में।	कॉक्सीनाशक दवा निर्धारित मात्राा में दें।
अन्तः परजीवी	3 माह की उम्र	बरसात के प्रारम्भ तथा अन्त में।	सभी पशुओं को एक साथ दवा देनी चाहिए।
बाह्य परजीवी	सभी उम्र में	सर्दियों के प्रारम्भ में तथा अन्त में या किसी समय संक्रमण होने पर	सभी पशुओं को एक साथ नहलायें तथा उसी दिन आवास के फर्श व दीवारों पर कीटनाशक का छिड़काव करें।

Vhdkdj.k rFkk Ñfegj.k nokvksa ds mi;ksx dk vUrjky de ls de 72 ?kaVs j[kuk pkfg,A

chekj cdfj;k dh igpku &

- बकरी की हाव–भाव, चाल तथा बर्ताव में बदलाव आना, दूसरों से अलग हटकर खड़ी, बैठी या लेटी रहना ।
- खाना कम कर देना या छोड़ देना, जुगाली न करना। मुख पर पसीना नहीं रहना और चमड़ा सूख जाना।
- शरीर के तापमान का सामान्य (102.5 डिग्री फारेनहाइट) से ज्यादा या कम होना। नाड़ी तथा साँस के गति में बदलाव आना।
- पैखाना और पेशाब के रूप–रंग में बदलाव आना।

इनमें से कोई भी लक्षण दिखाई देने पर उसे अलग रखें तथा इनका इलाज करायें। सर्वप्रथम बुखार की जाँच करें और अन्य लक्षणों को नोट करें। अलग–अलग बीमारियों में अलग–अलग लक्षण होते हैं।

cdfj;k e vQjk jkx &

बकरी जब हरी घास जरूरत से ज्यादा खा लेती है तो अफरा रोग हो सकता है। यह अधिकतर बरसात या बरसात के बाद होता है। पशु की बायीं ओर पेट में गैस एकत्रित हो जाने से यह फूल जाता है। हाथ से थप–थप करने पर ढ़प–ढ़प जैसी अवाज होती है। पशु के मुँह से झाग आने लगता है। पशु बेचैन हो जाता है तथा साँस लेने में भी कठिनाई होती है।

पशु को घुमा–फिराकर या रूमेन में सुई से छेद कर, किसी प्रकार से गैस निकालना चाहिए। साथ ही *rkjfiu dk rsy 100 xzke] ghax 2 xzke ,oa rhlh dk rsy 70 xzke feykdj* बकरी को पिलाएँ। दवा पिलाते समय ध्यान रखना है की दवा फेफड़े में न जाए। बजार में उपलब्ध दवा जैसे–*fVªiky nl xzke ;k CykVkfly 10 ls 20 ,e0,y0* प्रत्येक बकरी को पिलाना चाहिए। साथ में एभिल का 3 से 5 एम0एल0 मात्रा में इंजेक्सन, माँस में लगायें।

U;qeksfu;k &

यह जीवाणु तथा माइकोप्लाजमा जनित संक्रामक रोग है। इस रोग में बकरी को तेज बुखार के साथ आँख व नाक से पानी जैसा द्रव आता है तथा साँस लेने में कठिनाई होती है। रोगग्रस्त पशु द्वारा संक्रमित दाना–पानी व चारा खाने से यह स्वस्थ पशुओं में फैल जाती है। यह रोग वातावरण में तेजी व अचानक से परिवर्तन होने से पनपता है। इस रोग के जीवाणु सामान्य अवस्था में श्वाँस की नली में पाए जाते हैं और ठंड या किसी स्ट्रेस के कारण इसकी रोकथाम की शक्ति कम हो जाती है, तब यह जीवाणु जोर पकड़कर बीमारी पैदा करता है।

रोग ग्रस्त पशु को एन्टीबॉयोटिक्स की सुई आवश्यकतानुसार पशु चिकित्सक की सलाह से दें। साथ ही टिंकचर बेन्जोइन/तारपीन की तेल गरम पानी में डालकर नाक से भाफ (Steam) दिन में कई बार दें। जीवाणु जनित न्यूमोनिया के बचाव के लिए टीकाकरण करवायें।

;fj;k fo"kkDrrk &

बकरी जब यूरिया का छिड़काव किये गए खेत में चर लेती है तब प्रायः उसे यूरिया विषाक्तता हो जाता है। इसके फलस्वरूप पेट (रूमेन) द्रव्य क्षारीय हो जाता है। लक्षण में तेज पेट दर्द, कपकपाहट, पैरों में लड़खड़ाहट, लम्बी साँस लेना, जुगुलर नाड़ी की गति बढ़ जाना, पशु का चिल्लाना, मरने के पहले काफी तड़फड़ाहट तथा भयंकर दस्त का होना है।

इसके उपचार के लिए दो प्रतिशत ,flfVd ,flM ¼fljdk½ का 50 एम0एल0 मात्रा, पानी या तेल में मिलकर पिलायें या सीधे रूमेन में इंजेक्शन दें।

dkDlhfM;kfll &

यह रोग vkbefj;k uked ijthoh से होता है, जो 1 माह से 6 माह तक के बढ़ते बच्चों को ज्यादा प्रभावित करता है। प्रभावित बच्चे में बदबूदार दस्त, कब्ज, पेट में दर्द, शरीर में खून की कमी, चमक रहित कड़े नाक व निरंतर वजन में कमी दिखाई देती है। इसकी रोकथाम एक स्थान पर अत्यधिक बच्चे न रखकर, बच्चों को माँ/व्यस्क बकरियों से अलग रखकर, बाड़ों की नियमित सफाई व चूने का छिड़काव करके तथा आवश्यकतानुसार दवा खिलाकर की जा सकती है। इसके लिए निम्नलिखित दवा का उपयोग किया जा सकता है–

- 0.2 ग्राम सल्फाडिमिडिन प्रति किलो शरीर भार के हिसाब से 5 दिन तक दें।
- घुलनशील एमप्रोलियम पाउडर 50 मि0ग्रा0 प्रति किलो वजन के हिसाब से 20 प्रतिशत का घोल 6 दिन तक दें।

ckg; ijthoh ¼pekdu½ ls cpko &

किलनी, जूँ आदि बाह्य परजीवी बकरियों के शरीर पर रह कर उनका रक्त चूस – चूस कर कमजोर कर देते हैं। इन बाह्य परजीवियों से बचाव हेतु बकरियों को साल में कम से कम दो बार (ekp&vizy rFkk flrEcj&vDVcj में) दवा जैसे – ब्यूटॉक्स, टीकटेक, एक्टोमन इत्यादि के 0.2 प्रतिशत घोल से नहलाते हैं या आइवरमेक्टिन का 1 मिली0 प्रति 50 कि0ग्रा0 शारिरिक भार से चमड़े में सूई लगाते हैं। साथ ही पशु आवास में कीटनाशक दवा का पानी में मिलाकर छिड़काव करते हैं। दीवार पर दरार हों तो गोबर/सीमेन्ट के लेप से बंद कर दें। इन दरारों में किलनी तथा जूँ के अंडे और बच्चे छिपे रहते हैं।

[kjidk&e|gidk jkx ¼,Q0,e0Mh0½ &

यह एक तीव्र ज्वर, 104 से 106 डिग्री फा0 वाली संक्रामक विषाणु जनित रोग है, जो फटे खुर वाले पशुओं में होती है। यह एक बकरी से दूसरी बकरी में हवा द्वारा, दूषित पानी पीने अथवा रोगी बकरी के साथ चारा खाने से फैलती है। इसमें मुँह की भीतरी सतह, जीभ, पैर, थन व अयन पर छाले पड़ जाते है। पशु में लंगड़ापन एवं मुँह में छाले पाये जाने पर अक्सर इस रोग के होने की संभावना प्रकट की जाती है। इस रोग का कोई विशेष उपचार नहीं है, परन्तु रोगग्रस्त पशु में सहायक उपचार जैसे – पशु को अलग रखें, नरम एवं सुपाच्य भोजन दें, जीवाणुनाशक एवं दर्द निवारक दवा की सूई लगवायें तथा घाव–छालों की एन्टीसैप्टिक दवाओं से धुलाई करें। इस रोग से बचाव के लिए प्रतिवर्ष 6 माह के अन्तराल पर (*ekpl&vily rFkk flrEcj&vDVcj* में) 2 मिली0 दवा चमड़े में लगायें।

cdjh Iyx ¼ih0ih0vkj0½&

यह अत्यन्त संक्रामक विषाणु जनित रोग है जिसमें 90 प्रतिशत बकरियाँ ग्रसित हो जाती हैं तथा इनसे मृत्यु दर, 85 प्रतिशत तक हो सकती है। ग्रसित बकरियों का तापमान 105 – 106 डिग्री फा0, मुँह में छाले, काले रंग के दस्त, आँखों व नाक से पानी आना और साँस लेने में परेशानी होती है। मुँह के अन्दर के मसूढ़े तथा जीभ लाल हो जाते हैं। 4–12 माह के मेमनों में यह रोग तीव्र रूप से होता है। इस रोग से बचाव हेतु सभी बकरियों तथा बच्चों को 4 माह या उससे अधिक उम्र पर पी0पी0आर0 का टीका अवश्य लगवायें।

;Ñr Ñfe lØe.k ¼yhoj¶yd½ &

यह बीमारी, *Qfl ;kyk uked ij thoh* से फैलती है, जिसके अंडे, घोंघे के पेट में पलते हैं तथा बाहर निकलकर नदी, तालाब के आसपास की हरी घास में फैल जाती हैं। पशु के चराने से या यहाँ की घास खिलाने से कृमि बकरियों के शरीर में पहुँच जाती हैं। पशु का यकृत इन कृमियों से भर जाता है तथा कार्य शक्ति कम हो जाती है। बकरी को पतले बदबूदार तेज दस्त होती है जिससे वह दिन–प्रतिदिन कमजोर होती जाती है। इसके उपचार के लिए *vkDlhDyktkukbM dh xkyh ,d xke ifr 100 fdyk 'kjhj Hkkj dh nj l ;k fuytku 1 fe0yh0 ifr 3 fdyk 'kjhj Hkkj dh nj* से देनी चाहिए। ठहरे हुए पानी/तालाबों/पोखरों से बकरी को पानी न पिलायें तथा इसके आसपास की हरी घास न खिलायें।

*****

औजार

बाड़ा निर्माण के बाद उचित पालन–पोषण के लिए बाजार से सामान की खरीद कर लेनी चाहिए। इसे आप स्वयं बनवा भी सकते हैं।

1. *QhMj* – जिस बर्तन में बकरियों को चारा खिलाया जाता है उसे फीडर कहा जाता है। यह लोहा या टिन का बना होता है। इसके नीचे सुराख बना रहता है, जिसमें चारा भर दिया जाता है। बकरियाँ नीचे बने सुराख से चारा चुगने लगती हैं। जैसे–जैसे बकरियाँ चारा खाती हैं वैसे–वैसे चारा नीचे की ओर खिसकने लगता है, इससे चारा की बर्बादी नहीं होती है।
2. *fMdj* – यह बकरियों के पानी पीने का बर्तन है। मेमनों के लिए छोटे आकार का और बकरियों के लिए बड़े आकार का बर्तन चाहिए। इसकी ऊँचाई बकरियों के ऊँचाई के हिसाब से रखें ताकि उनको पानी पीने में कठिनाई न हो।
3. *xeyk* & यह बकरियों को दाना खिलानें के काम आता है। यह बर्त्तन अल्युमिनियम या टिन के चदरे का बना होता है। अल्युमिनियम का बना चदरा ज्यादा बेहतर होता है।
4. *dkLVVj* & इसके जरिये बकरियों के नर बच्चों को बधिया किया जाता है।
5. *VVkbx e'khu* & इस मशीन से मेमनों एवं बकरियों के कान में पहचान हेतु नम्बर लगाया जाता है। मशीन के साथ इसमें उपयोग आने वाली स्याही भी बाजार से खरीदें।
6. *rjkt* & यह बकरियों के वजन नापने के काम में लाया जाता है। 50 से 100 किलो ग्राम के क्षमता के घड़ी वाली स्प्रींग तराजू लें।
7. *MkDVjh FkekehVj* & यह बकरियों के बुखार नापने के काम में आता है।
8. *c[kkjh* & यह एक तरह की लकड़ी का बना हुआ चूल्हा होता है। जिसमें धुआँ बाहर निकलने की व्यवस्था होती है। जाड़े में मेमनों को सर्दी से बचाने में यह बहुत ही उपयोगी होता है।
9. *Li;j* – यह बकरियों पर या बकरी घर में दवा का छिड़काव करने के काम में आता है। यह फसलों पर दवा का छिड़काव करने वाले स्प्रेयर की तरह ही होता है।

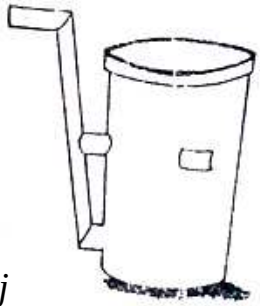

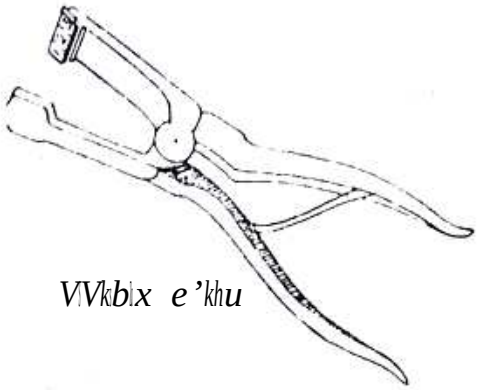

rjkt
fMdj
xeyk
FkekehVj
Li;j
VVkbx e'khu
dkLVVj
c[kkjh
Li;j
QhMj
QhMj

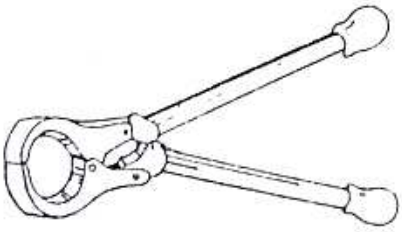

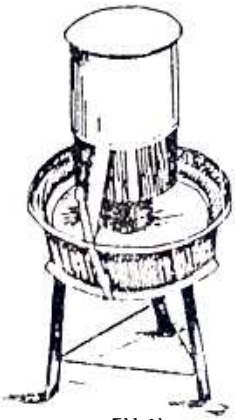

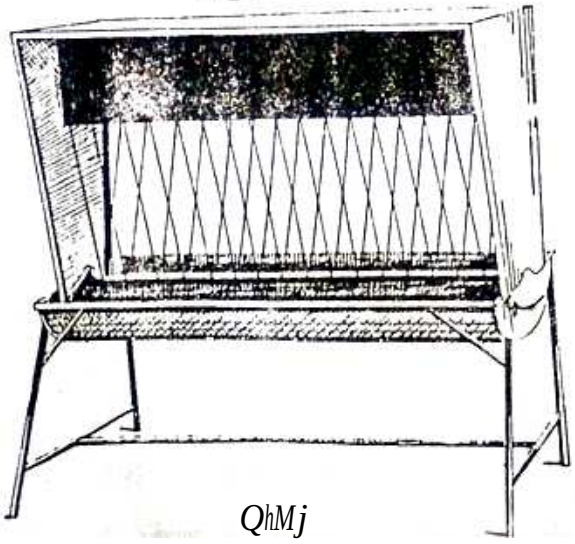

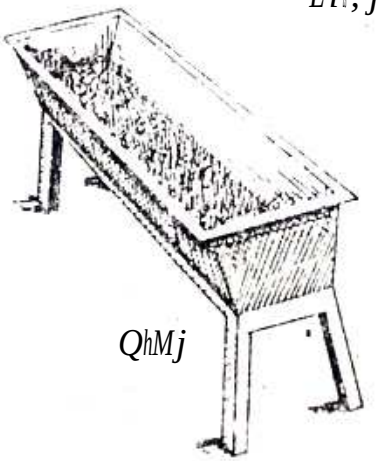

खाता–बही

किसी भी व्यवसाय की सफलता उसके सही हिसाब–किताब रखने पर ही निर्भर करती है। इससे समय–समय पर खर्च और आमदनी का पता चलता रहता है। इसके लिए कुछ रजिस्टर खरीद कर इसमें नीचे बताए हुए तरीके से तालिका बना लें।

jftLVj u0 1
i'k vfHkyf[k cgh &

क्रम सं0	बकरी का अंकन	जन्मतिथि / खरीद तिथि	नस्ल / रंग और पहचान	खरीद / बिक्री मूल्य	वंश		बाड़े पर कब तक रही / मरी / बेची गई	अभ्युक्ति
					माता	पिता		

jftLVj u0 2
pkjk&ikuh cgh &

क्रम सं0	तिथि	बकरियों का अंकन	दाना				सूखा चारा				हरा चारा				अभ्युक्ति
			प्रारंभिक	बढ़ोत्तरी	खर्च	शेष	प्रारंभिक	बढ़ोत्तरी	खर्च	शेष	प्रारंभिक	बढ़ोत्तरी	खर्च	शेष	

jftLVj u0 3
xHkk/kku cgh &

क्रम सं0	बकरी का अंकन	गर्भ होने का तिथि एवं समय	बकरा का अंकन	गर्भाधान का समय		गर्भाधान कराने वाले का नाम	अभ्युक्ति
				घंटा	मिनट		

jftLVj u0 4
eeuk cgh &

क्रम सं0	बकरी का अंकन	बोका का अंकन	गर्भाधान की तिथि	बच्चा के जन्म होने की तिथि	मेमना या मेमनी	वजन		पहचान मार्क	अभ्युक्ति
						किलो ग्राम	ग्राम		

jftLVj u0 5
n/k dh nfud fcØh cgh –

क्रम सं0	तिथि	उत्पादित दूध की मात्रा	बिक्री दूध की मात्राा	दर		अभ्युक्ति
				रूपया	पैसा	

jftLVj u0 6
fpfdRlk fooj.k cgh –

क्रम सं0	तिथि	बकरियों के अंकन तथा पहचान	बीमारी के लक्षण	इलाज का विवरण

*****